HIN3B14a_cours-08-2013-03-28-épisode-03

बस, इसके बाद दोनों के साथ जो कुछ हुआ उसे आपके हो जाएँगे। वीरेन्द्र को दयासिंह, इन्द्रजीत, संदीप, पवन और शिखा के नाबालिग़ भाई ने मिलकर एक कमरे में बन्द कर दिया और घंटों ढाते रहे। उसकी हर चीख पटाख़ों के शोर में हो गई। इधर लमहा-लमहा वीरेन्द्र की रही थी और उधर इन्द्रजीत और संदीप खुद दयासिंह की उसी मकान में शिखा की कर रहे थे। आख़िरकार शिखा को में रखकर घरवालों ने वीरेन्द्र का क़त्ल कर दिया और को एक मारुति वैन में लाद कर में फेंक दिया।

लड़की ने ये भी दिया हुआ है कि संदीप और इंद्रजीत ने उसके साथ रेप भी किया। इसके बाद सभी ने वीरेन्द्र को, वीरेन्द्र को और लड़की को मार-पीटा। जान से मारने की भी धमकी दी लड़की को कि चुप रहना तुम। इधर वीरेन्द्र को उन्होंने एक रस्सी है, रस्सी से उधर गला घोंटके मार डाला।

झूठी शान के अपने ही हाथों अपनों की ही ज़िंदगी करने की यह ख़ौफनाक कहानी शायद कभी ज़माने के सामने नहीं आती, लेकिन बाईस अक्टूबर को घरवालों के से छूटकर शिखा किसी तरह दिल्ली के नरेला पुलिस स्टेशन पहुँची और सारी कहानी आम हो गयी। पुलिस ने तफ़तीश की और फिर ज़ल्द ही सभी-के-सभी उसके में आ गये।

सत्रह अक्टूबर की रात इस मकान में शिखा के साथ जो कुछ भी हुआ उसका सबसे पहलू ये है कि ये सब कुछ उसके अपनों की से ही हुआ। अब क़ानून भले ही आरोपियों को सख़्त-से-सख़्त दे दे, लेकिन शिखा के दिल में जो है वो शायद कभी नहीं पाएगा।

वीरेन्द्र और शिखा एक ही गोत्र के थे और उनकी प्रेम कहानी को ने वक़्त से पहले ही दिया।

शिवेन्द्र, अनुज और सुप्रतिम के साथ तनसीम हैदर, दिल्ली, आजतक